निवेदन

वैद्य समाज के सामने यह छोटीसी पुस्तिका रखते हुवे हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस पुस्तिका में हमारे द्वारा निर्मित पेटन्ट फलदायक एवं प्रमाणित औषधियों के बारे में पूरा विवरण दिया है।

"चरक फार्मास्युटीकल्स" पिछले १८ वर्षों से शुद्ध एवं शास्त्रोक्त, पेटन्ट औषधियां निर्माण करके भारतीय चिकित्सा जगत एवं जनता की सेवा कर रही है। हमारी औषधियों की शुद्धता एवं हमारे नुस्कों की प्रमाणिकता में संपूर्ण विश्वास होने से, आज ज्यादा लोग एवं वैद्य तो हमारी औषधियाँ वापरते ही हैं, लेकिन हर आयुर्वेद प्रेमी के लिए यह गौरव एवं हर्ष की बात है के प्रति उपेक्षा रखने वाले, एलोपेथी के डॉक्टर, हॉस्पिटलस् भी ज्यादा से ज्यादा हमारी औषधियाँ रोजिंदा व्यवहार में लाते हैं। आपको हर्ष होगा कि 'चरक' ने आयुर्वेदिक औषधियों के क्षेत्र में नई क्रांति लाकर लोगों का विश्वास सम्पादन किया है। आज सभी लोग हमारी अचूक, लाभदायक, कभी भी निष्फल न होने वाली, आधुनिक ढंग से बनी हुई औषधियों को पूरे विश्वास के साथ प्रयोग करते हैं और सिफारिश करते हैं।

आयुर्वेद की यह विजय पताका 'चरक' ने भारत भर के एलोपेथिक डॉक्टरों की दुनियामें तो लहराई ही है, लेकिन यदि इतना ही था तो बहुत कम था। मगर भारत की सीमा के बहार भी लंका, अफ्रिका, एवं कुछ यूरोपियन देशों के डॉक्टरी समाज भी श्रद्धा, संतोष और उत्साह से 'चरक' की चीजें प्रयोग करके आयुर्वेद के महत्ताके प्रति अपनी अंजली अर्पित करते हैं।

हमारे लिए आयुर्वेद की यह विजय कुच अवश्य ही गौरव का विषय है। फिर भी हम आपको यहाँ हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के उन वचनों की याद दिलाते हैं कि "जो आयुर्वेद में है वह सब जगह है। जो आयुर्वेद में नहीं है, वह कहीं भी नहीं है"। हमारी प्रगति इन वचनों का सार्थकता का प्रमाण है।

लेकिन प्रगति बगैर प्रयत्न एवं प्रामाणिकता के सम्भव नहीं है। और यही हमारी विशेषताएँ हैं।

किसी भी पेटेन्ट विक्रय के लिए बाजार में रखने से पूर्व उसके ऊपर पूरा-पूरा परीक्षण १०/२० नहीं, १००/२०० नहीं, हजारों मरीजों के ऊपर किया जाता है। उसके बाद उसके घटक द्रव्यों का निर्णय करके बाजार में रखी जाती है। इससे आपको

विश्वास होता है कि आप 'चरक' की जो भी औषधि प्रयोग करते हैं वो पूरी तरह परीक्षित है और आपको इच्छित लाभ पहुंचाएगी ही। आप निःसंदेह प्रयोग कर सकते हैं।

हमारी दूसरी विशेषता यह है कि हमने हमारी औषधियों को आधुनिक रूप दिया है। आकर्षक, रंगबेरंगी कोटिंग तथा स्वादिष्ट पेय, हमारी मौलिक विशेषताएँ हैं। और सबसे आवश्यक अंग यदि प्रगति का कोई है तो वह एकरूपता एवं घटक द्रव्यों की शुद्धता। इन्हीं विशेषताओं के कारण आज 'चरक' की औषधियाँ इतनी लोकप्रिय हो रही हैं।

इसी कारणवश आज जब चिकित्सा जगत का कोई भी छोटा या बड़ा जब औषधियों की गुणमत्ता, शुद्धता और एकरूपता की बात करते हैं, तो अन्त में यही कहते हैं—'चरक'।

विनीत,

चरक फार्मास्युटीकल्स

विषय सूची

विषय सूची

वीर्य, शक्ति और पुरुषत्व बढ़ाती है।

अँडीझुआ (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकि)

उपयोग : शामक वाजीकर—जिन व्यक्तियों पर तेज वाजीकरण द्रव्य उपयुक्त नहीं किए जा सकते हों। शुक्र को गाढ़ा बनाती है। खास तौर से उनके लिए उपयुक्त जो कि रक्त-चाप, अम्लपित्त, हृदयरोग, वृक्कविकार, और चर्मरोग से पीड़ित हैं।

सावधानी : कुछ नहीं अगर प्रमाणित मात्रा में व्यवहार किया जाय।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि ग्रा.
अभ्रक भस्म	५	प्रवाल	१०
अष्टवर्ग	५१	शतावरी घन	२०
अश्वगंधा	२०	शिलाजित	५०
चोपचिनी	२०	सितोपलादि	१०
गोखरु घन	२०	सु. माक्षिक	२०
गिलोयसत्व	१५	त्रिवंग	५
लोह भस्म	५	वंग भस्म	५

भावना : आंवले और भृंगराज स्वरस।

सेवन विधि : दो टिकियां दिनमें २ या ३ बार दुध से।

पेकिंग : टिकियां

४०, १००, ५००, १०००

सृजनयुक्त या चूछाने जैसे दर्दवाला अल्सर जो उदर के अंदर या बहार के हिस्से में हो, या रक्तस्राव युक्त हो ।

अल्सरेक्स (टिकी)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : पेप्टिक अल्सर (गेस्ट्रिक, डीओडिनल, जेजुनल, अल्सर)

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
आमलकी रसायन	६०
कामदुधा रस	११५
सूतशेखर रस	५७.५
जसद भस्म	३०
ज्वरमोहरा पिष्टि	५७.५

गुलर, श्वेतचंदन, पुनर्नवा, त्रिफला, जिरा और रोहितक इनकी भावना देकर बनाया हैं ।

सेवन विधि : प्रथम या द्वितीय अवस्था में २ टिकियाँ टी. डी. एस्. या क्यू. डी. एस् या ३ टिकियाँ बी. डी. एस्. जीरा चूर्ण और दुगुने मक्खन के साथ या मीठे नीबू के रस या दुध के साथ छह से बारह हप्ते तक और पुराने दर्दमें तीसरी अवस्थामें संभवतः दर्द फिर उलट न जाने पाय इस हेतूसे १२ हप्ते तक अधिक दवा का इस्तेमाल चालू रक्खें ।

उमडे हुए जगहको सुधारकर चुभनेवाले अल्सर जो उदर के अंतस्तलपर हो या बाहर खून के स्त्राव को बंद करता है ।

पेकिंग : टिकियाँ

४०, १००, ५००, १०००

कमजोर और थके हुवे हृदयको मजबूत बनाता है।

अर्जुनिन (टिकी)

(हृदयगतिनियामक टॉनिक)
(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : कमजोर बना और थके मांदे हृदय की गतिको हलके से सुधार कर स्वस्थ बनाता है।

घटक : प्रति टिकि :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक	३	पिपली	६
अकिक भस्म	३	रससिंदुर	६
आरोग्यवर्धिनी	३	रुमिमस्तकी	६
आसोंदरा छाल	६	सफेद मिर्च	६
बाहमन छाल	६	शेमल त्वक	६
बाहमन सफेद	६	शंख भस्म	३
डिजीटेलीस	६	शिलाजित	६
इलायची	६	सुवर्णमाक्षिक	६
गंगेटी	६	तमाल पत्र	६
जटामांसी	६	कठ	६
जायफल	३	उत्कंट्टो	६
जेठीमध	६	वंशलोचन	६
लविंग	६	वावडिंग	९
मृगशृंग	७	ज्वहर मोहरा	६

भावना : अर्जुन के ७ क्वाथ में बनाया हुआ।

सेवन विधि : दो टिकियां दिन में ३ वक्त कॉफी के साथ।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

खून बहना बंद करती है, उमडा हुवा बवासीर रोकती है और खुजली मिटाती है।

अर्शोनिट (टिकी) (साधारण)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : खूनी या बादी के बवासीर के लिए।

सावधानी : कुछ नहीं अगर प्रमाणित मात्रा दी जाय।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
बेलफल	१६
हरडे	३५
हिराबोल	३५
जंगली सुरण	३५
ज्येष्टिमध	१६
कडु	१६
लिंबोडी मगज	३५
नागकेशर	१७
राल	१६
सोंठ	१६

भावना : गिरसाला, गुलाब, जासूंद, कौंचापान, कोठापान, इन्द्रजव, मोथ, त्रिफला।

सेवन विधि : दो, दो टिकियां दिन में ३ बार मीठे जल से।

पेकिंग : टिकियां

४०, १००, ५००, १०००

खून बहना बंद करती है, उमडा हुवा बवासीर रोकती है और खुजली मिटाती है।

अर्शोनिट (टिकी) (तेज)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : साधारण टिकीयां के अनुसार, लेकिन शीघ्र गुणप्रद।

सावधानी : कुछ नहीं।

घटक :

	मि. ग्रा.
रीठेका मजि	१६
वेलफल	१६
हरडे	३५
हिराबोल	३५
हिरादखन	१६
जंगली सूरन	३५
ज्येष्ठिमध	१६
कर्पूर	३५
कुटकी	१६
निंबोली मगज	३५
नागकेशर	१७
राल	३५
रसवंती	१६
सोंठ	१६

भावना : अमलतास, कोठापान, जासूंद, गुलाबफूल, कौचापत्र, इन्द्रजव, मोथा, त्रिफला स्वरस।

सेवन विधि : दो, दो टिकियां दिनमें ३ बार जलसे। शक्कर मिले जलसे लेने से विशेष लाभदायक रहती है।

पेकिंग : टिकियां

४०, १००, ५००, १०००

बहते खून को रोक देता है उमडा बवासीर (मस्से) को सुखा डालता है, बवासीर और खुजली को मिटा देता है। टिश्यु को संवारता है।

अर्शोनिट (मल्हम)

बादी या खूनी बवासीर के लिये

(हर एक ट्युब २५ ग्राम की)

उपयोग : अर्शोनिट मल्हम लगानेसे खून बंध हो जाता है, खुजली कम हो जाती है, बवासीर और फिशर के घाव को रुज आती है एवं टिश्यु स्वस्थ बनानेमें सहाय देता है।

घटक : हरएक २५ ग्राम :—

	ग्राम
आंबाहलदी	५
सफेद कत्था	१
मर्डाशिंगी	५
शहजिरा	५
सोनागेरु	५
फिटकडी	५
वरकी हरताल	५
बेस	१.५

भावना : अर्शोनिट मल्हम दस्त होने के पहले (सुलभ और दर्दरहित) मलविसर्जन हालत के लिये २ से ३ मर्तबा मलविसर्जन हालत के बाद नियमित रीत से इस्तेमाल करें।

सेवन विधि : इस्तेमाल करनेसे बवासीर मस्से सूख जाते हैं, खून को बंद कर देता है, खुजलीको मिटाता है, बवासीर और फिशर को स्वस्थ बनानेमे मदद करता है।

पेकिंग : २५ ग्राम का ट्यूब

मानसिक परेशानी और थकावट दूर करती है। व्याकुलता अथवा आलस्य का नाश कर के सामान्य अनुकूलता लाती है।

आशर (टिकी)

(प्रति ३०० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : हिरिटिरिया, मानसिक उद्वेग, चिड़चिड़ापन, मानसिक अस्थिरता, आक्षेप सदस शारीरिक स्थिति, एकाग्रता की कमी, वात कफज एवं वात पित्तज मनोव्याधियां।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
जटामासी	६०
जीवन्ती	१२०
मालकांगनी का तेल	३
उग्रगंधा (बच)	१२०

चिकित्सा काल : आशर टिकियों का असर ४ से ५ रोजमें दिखने लग जाता है। यही चिकित्सा तब तक चालू रखनी चाहिए जबतक मरीज़ बिलकुल स्वस्थ न हो जाय। उसके बाद खूराक कम कर दें। ये टिकियाँ ३ से ६ माह तक बगैर किसी भय के चालू रखी जा सकती हैं। ये टिकियाँ बिलकुल निर्भय हैं और किसी भी बुरे प्रभाव से रहित हैं और किसी कारण से इन टिकियों मरीज को आदत नहीं पडती हैं।

सावधानी : कोई नहीं। अन्य किसीभी चिकित्सा के साथ भी दी जा सकती हैं।

सेवन विधि : एक, एक टिकी दिन में ३ बार से शुरु करके आवश्यकता पड़ने पर ३।४ टिकीयों दिनमें ३ बार तक ले सकते हैं।

पेकिंग : टिकीयां
४०, १००, ५००, १०००

विभ्रम और मानसिक दवाव को, समाप्त कर बौद्धिक क्षमता. चिन्तन शक्ति, स्मरण और इच्छा शक्ति उत्पन्न करती हैं।

विकामीन (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की टिकी)

उपयोग :	मानसिक स्वास्थ्य, दिमागी कमजोरी, अज्ञात कारणों से प्राप्त मानसिक अस्वस्थता, स्वभाव का चिडचिडापन इत्यादी।
सावधानी :	कुछ नहीं।
घटक :	प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
जटामांसी धन	३०
कोहलाबीज	३०
रुद्राक्ष	३०
सर्पगंधा	४६
शंखावली धन	९०
सुवर्ण माक्षिक	१५
जहर मोहरा	१५

सेवन विधि :	दो टिकियां दिन में २ से ३ वार जल से।
पेकिंग :	टिकीयां ४०, १००, ५००, १०००

पेशावसे पथरीको बाहर करती हैं, निर्बाध पेशाब लाती हैं और उसे ठीक करती हैं।

कॅलक्युरी (टिकी)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : अश्मरी, पेशाब रुक रुक के आना, थोड़ी थोड़ी पेशाब बारबार आना व मूत्रवाहिनियों का दर्द।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
धमासो	२०	पाषाणभेद	४०
गोखरु	२०	पत्थरतोड	२०
हजरलयहुद भस्म	४०	रेवंची लाकड़ी	२०
कागदी इलायची	१०	सरगवा त्वक	१०
कडाछाल	४०	शिलाजीत	२०
पलाशपुष्पधन	४०	सुराक्षार	१०
पलासक्षार	१०	वायवर्ण त्वक	१०
		जवाक्षार	१०

भावना : बरुमूल, भोयपाथरी, दर्भमूल, गोखरु, कड़ाछाल, पलाशपुष्प, पत्थरतोडरस, सरगवात्वक, शरपंखामूल शेरडीमूल, वायवर्णत्वक।

सेवन विधि : दो, दो टिकीयाँ दिनमें तीन बार जल से।

पेकिंग : टिकीयाँ

४०, १००, ५००, १०००

हा आकस्मि संयोग पर बच्चा होने के पहले पुन: गर्भाधान को रोक कर मां और बच्चे की रक्षा करती है।

कॅरीटोन (टिकी)

(प्रति १९२ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

सगर्भावस्था के प्रथम ४ मास के लिये गर्भ की रक्षा करने के लिए व उनकी वृद्धि में सहायता देने के लिए। सगर्भावस्था की इन सहज शिकायतों के लिये अत्युत्तम—जैसे कि उलटी, अरुची, दर्द, बंधकोश, घबराहट, भोजन के बाद पेट भारी होना, कमर का दर्द श्वेतप्रदर इत्यादी। माता के दूध का संशोधन करके उनको दोषरहित बनाती है। और गर्भपात होने से रोकती है।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
अभ्रकभस्म १०० पुटी	५
गर्भपालरस	१२८
गोदंती	१०
लोहभस्म	५
प्रवालपिष्ठि	१०
रौप्य भस्म	५
रस सिन्दूर	५
शुक्तिभस्म	१०
सु. माक्षिक	९
बंग भस्म	५

भावना :

दारो, जिवंती चणकबाब, कपूरकाचली, पुष्यानुग चूर्ण त्रिफला, श्वेतगर्णी, गिलोय।

सेवन विधि :

दो, दो टिकियां दिन में दो बार जल से।

पेकिंग :

टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

वजन में वृद्धि और क्षयकारी रोगोंका श्रेष्ठ इलाज।

सर्टीना (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : यक्ष्मा की प्रथमावस्था, क्षयजन्य गठाने होने पर कमजोरी, वजन कम होते जाना, इत्यादि।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
अभ्रक सहस्र पुटी	१५
अकीक	२०
चोपचीनी	१५
गोदंती	४०
मौक्तिक भस्म	१६
प्रवाल	३०
शृंगभस्म	१५
सितोपलादी	३०
सुवर्णमाक्षिक	१५
वाकेरी	१५
वंग	१५
वंशलोचन	३०

भावना : भांगरा दारुहरिद्रा, गिलोय, कांचनार, महानिंब, सप्तपर्ण, त्रिफला।

सेवन विधि : बड़ों को २ टिकीयां दिन में २ से ३ बार दुध से। बच्चों को आधी खुराक।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

अच्छी भूख, पाचन-शक्ति और नींद पैदा कर शरीर को सामान्य ताप प्रदान करती हैं।

क्युरील (टिकी)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : मलेरिया, तृतीयक, चातुर्थक, या अन्येधुष्क, ज्वर, जीर्ण एठिला ज्वर, इन्फ्लुएन्झा, शर्दी, जुखाम, पैतिक ज्वर कफज ज्वर, छोटी माता, इत्यादि।

सावधानी : इन टिकीयों को टाइफॉईड में नहीं देना चाहिये।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
सिंकोना त्वक	१५	लघुमालिनी वसंत	१
गोदंतीभस्म	२	मामीजवा	१८
गिलोयसत्व	४	काली मीर्च	४
गिलोय	१६	नागरमोथा घन	१५
शुद्ध हिंग	१	पिपली मूल	१
कदबा	२	पित्तपापडा घन	१५
करंज	१	सप्तपर्ण	१८
चिरायता	१६	शुद्धसोमल	१
कुटकी घन	१६	सोनामुखी	१६
टंकणखार	१		

भावना : तुलसी, अदरक व धतुरा,

सेवन विधि : बडों को दो टिकीयाँ दिन में २ से ३ बार जल या दुध या शहद से।

बच्चों को १ टिकी २ से ३ बार।

शिशुओं को १।२ टिकी २ से ३ बार जल या शहद से।

पेकिंग : टिकीयाँ

४०, १००, ५००, १०००

पुराने अतिसार, आंव और उससे सम्बद्ध बीमारी का विशिष्ठ इलाज।

दीपन (टिकी)

(प्रति १९२ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : किसी भी प्रकार की संग्रहणी, प्रवाहिका, दस्तें होना ग्रीष्म कालीन दस्तें रक्त दस्तें, आंतों के छाले, दांत आते समय के हरे पीले दस्त, इत्यादि।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि ग्रा.
आमकी गुटली धन	१५	नागर मोथा	१५
बेलफल धन	१५	पंचामृतपर्पटी	५
बोलपर्पटी	१०	पीली राल	१०
कोरीयेन्डरफल धन	१५	रसपर्पटी	५
धावडी पुष्प	१०	रससिन्दूर	३
कोनेसी धन	१५	शंखभस्म	५
जायफल	३	सोंठ	१५
कालीपाट	१०	टंकन खार	५
कडाछाल धन	३	सौंफ धन	१५
मोचरस धन	१५	मेस	३

भावना : कृष्णजीरक, कपीलो, अरडुसा, महासुदर्शन, वावडींग।

सेवन विधि : वयस्कों के लिए २–२ टिकियां दिन में ३ बार जल से।
बच्चों के लिए १ टिकी २ से ३ बार।
शिशुओं के लिए १।३ टिकी २ से ३ बार जल से।

पेकिंग : टिकीयां
४०, १००, २५०, ५००, १०००

तीक्ष्ण शूल, दस्त और उससे उत्पन्न बिकार का मौलिक उपचार।

डायाडीन (प्रवाही)

उपयोग :

पुराने दस्त, ज्यादे मात्रा में वार-वार दस्त आना, आंव, खून के दस्त, ग्रीष्मकालीन दस्ते, संक्रामक या अन्यकारणों से लग रहे दस्त तथा संग्रहणी की विविध अवस्थाओं में।

घटक :

प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अर्जुनारिष्ट	१०
जीरकाद्यारिष्ठ	१५
कर्पूरासव	२५
कुटजारिष्ट	२५
महासुदर्शन	१०
उशीरासव	१५

सेवन विधि :

वयस्कों को १/२ से १ बडा चम्मच ३ से ४ बार दिन में उतने ही जल से।

बच्चों को आधी खुराक।

पेकिंग :

मि. लि.

२००, ४००,

कंठ की पीडा को ठीक कर सामान्य स्वास्थ्य लाती है।

ड्रायकोनील (प्रवाही)

उपयोग :

सूखी खांसी, त्रासदायक "वूपिंग कफ" या काली खांसी, एलर्जी का दमा, जुखाम, क्षय की प्रथम अवस्था में, तथा जाडे की खांसी में।

शामक, एलर्जी, नाशक, कफनिस्सारक।

घटक :

प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अभयारिष्ठ	१०
अर्जुनासव	१०
कुमारी आसव नं. ३	१०
महासुदर्शन	१०
पुनर्नवासव	१०
सितोपलासव	३०
सोमशर्बत	२०

सेवन विधि :

वयस्कों को २ से ३ चम्मच ३ से ६ बार उतने ही जल से। बच्चों को १/२ से १–१/२ चम्मच ३ से ६ बार उतने ही जल से।

पेकिंग :

मि. लि.

२००, ४००

योनि मार्ग से गंदे तत्वों को रोकती हैं और सामान्य स्वास्थ्य लाती है।

फेमिप्लेक्स (गोली)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की रुपेरी गोली)

उपयोग : श्वेतप्रदर या योनी से किसी भी प्रकार का होने वाला स्राव, सगर्भावस्था या प्रसूति के बाद का प्रदर जब स्थानिक इलाज संभव न हों। स्त्री सहज अन्य शिकायतें दुर करके शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करती है।

घटक : प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अशोकत्वक	१६	नागकेशर	८
श्वेतचंदन	८	उलटकंवल	१६
दारु हरिद्रा	१६	प्रवालपिष्टी	४
धायपुष्प	१६	पुत्रंजीवीत्वक	१६
गोदंती भस्म	१६	शिमलात्वक	१६
गोखरु	१६	शतावरी	१६
गिलोयसत्व	८	शुक्तिभस्म	१६
हिराबोल	४	शुद्धस्फटिक	४
जासुंदत्वक	१६	सु. माक्षिक	१२
कमल के फूल	१६	त्रिबंग भस्म	८
चणकबाव	८	उमरा फल	१६
लोध्र	१६	अरडुसी	८
लोहभस्म	८	शिलाजीत	१६

मेंहदी का रस व तांदलजा का क्वाथ।

सेवन विधि : दो गोली दिन में २ से ३ बार दुध या जल से। मात्रा धीरे-धीरे कम करें। ९०% मरीजों में १०० गोलियों का पूरा कोर्स देने पर सम्पूर्ण लाभ मिलता है। १०% में मरीज की हालत देखकर आगे सेवन करना।

पेकिंग : गोलियाँ

४०, १००, ५००, १०००

पेट साफ करता है और कब्ज दूर करता हैं।

फ्रुटलेक्स (चाटण) (साधारण)

उपयोग :

जीर्ण बंधकोष, आंतों की मल बाहर फेकने की शक्ति को बढाकर बगैर तकलीफ दस्त लाता है। अर्श, भगंदर से पीडितों के लिए अमृत तुल्य, टाइफाइड व शस्त्रक्रिया के बाद जब आंतों की गति मंद होती है।

सगर्भावस्था में तथा मासिक धर्म के समय स्त्रिओं को विशेष उपयोगी।

घटक :

प्रति १०० ग्राम :—

	ग्राम.
अजवायन	.५
अजीर	२०
गुलाब पत्ती	.५
ज्येष्ठी मध	.५
खजुर	२०
शहद	५
जरदालु	२०
काले मुनक्के	२०
सोनामुखी	६
सोंठ	.५
टंकणखार	१
तुलसी पान	.५
बडी सोंफ	.५
शर्बत	५

सेवन विधि :

२ से ३ चम्मच रात को सोते समय गरम दुध या पानी से। बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग :

ग्राम

२००, ४००

पुराने कब्ज से ग्रासित पेट ठीक करता हैं।

फ्रुटलेक्स (चाटण) (तेज)

उपयोग :	पुराना व सख्तबंधकोष खास तौर से शारीरिक मेहनत करने वालों, और मांसाहारी व्यक्तियों के लिए विशेष उपयोगी।
घटक :	प्रति १०० ग्राम:—

	ग्राम.
अजवायन	.५
अंजीर	१८
गुलाब पत्ती	.५
ज्येष्टीमध	.५
खजूर	१९
शहद	५
जरदालू	१९
काले मुनक्के	१८
सोनामुखी	१२
सौंठ	.५
टंकणखार	१
तुलसी पान	.५
सौंफ	.५
शर्बत	.५

सेवन विधि :	एक से दो चमच रात को सोते समय गरम पानी से बच्चों को आधी खुराक।
पेकिंग :	ग्राम २००, ४००

माँ और बच्चे पर बिना असर डाले स्तन में दूध बढाती हैं।

गॅलेकोल (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : दुग्ध वर्धक ! माताओं के मानसिक एवं शारीरिक किसी भी कारण से रुके हुए दुग्ध प्रवाह को ठीक करने के लिए।

घटक : प्रति २५६ मि. ग्रा. :—

	मि. ग्रा.
अश्वगंधा	३०
देवदार	६
गोखरु	१०
गिलोय	२०
जेठीमध	२०
कपास	१०
कौंच	२०
अरडुसापत्र	२०
कडुनिंब पत्र	१०
पिपलामूल	१०
राखा	२०
शतावरी	३०
सोंठ	१०
बच	१०
विदारी कंद	३०

भावना : अनंतमूल, कालीपाट, कपासमूल, चिरायता, मोखेल का क्वाथ, मोथा, पहाडमूल, शेरडीमूल, तगर, कडु ।

सेवन विधि : दो टिकीयां दिन में २ से ३ बार जल से ।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

हर गैस को समाप्त करती है क्योंकि यह पाचन-क्रिया को सुधारती है।

गार्लिल (गोली) (बगैर कोटिंग)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की बगैर कोटिंग गोली)

उपयोग : गेस, अफरा, उदरशूल, अजीर्ण, अरुची और पाचन की अन्य खराबियां।

सावधानी : रक्तार्श के रोगियों को न दें।

घटक : प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.
शुद्ध हिंग	२४
इन्द्रजव	३४
कुटकी	१६
शुद्ध तिंदुक	१६
लहसून	६२
मंडूर भस्म	३२
प्रवाल पिष्ठि	१६
शुद्ध कांचन	१६
संचल	१६
उपलेट	८
वायवडिंग	१६

भावना : सोंठ, कुवारपाठा, एवं हिमेज।

सेवन विधि : एक या दो गोलियां भोजन के पश्चात् पानी से। तीव्र रोगावस्था में मात्रा शुरु में दुगुनी दें। बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

गैस और पेटमें गैस से उत्पन्न गडबडी को समाप्त कर पाचन-शक्ति बढाती है।

गार्लिल (गोली) (कोटिंग साथ)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड गोली)

उपयोग :

एक उत्कृष्ट वातानुलोमक जो की जड से रोग को दूर करती है। गेस, अफारा, उदरशूल, भोजन के पश्चात होनेवाली घबराहट, प्रसूता, सगर्भा व शस्त्रक्रिया के पश्चात की अवस्था में विशेष उपयोगी।

जो लोग ऐसी दवाइयों में बास से नफरत करतें हैं उनके लिए खास तौर से यह प्रस्तुत है। गंधहीन है।

प्रति गोली :—१६० मि. ग्रा. औषध द्रव्य एवं-१६० मि. ग्रा. कोटिंग में आती है।

घटक :

प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
शुद्ध हिंग	१५	प्रवाल पिष्टी	१०
इन्द्रजव	२०	शुद्धकांकच	१०
कुटकी	१०	संचल	१०
शुद्धतिंदुक	१०	उपलेट	५
लहसून	४०	वायवडींग	१०
मंडुर भस्म	२०		

भावना :

सोंठ, कुंवारपाठा, व हिमेज का क्वाथ,

सेवन विधि :

एक से दो गोलियां भोजन के पश्चात जल से। शीघ्र आराम के लिए ३ गोलियां।

पेकिंग :

गोलियां

४०, १००, ५००, १०००

मसूढ़े को साफ करती हैं तथा दांतों के विकार और कमजोरी को दूर करती हैं।

गमटोन (दंतमंजन)

उपयोग : मसूढों एवं दांतो की हर प्रकार की बिमारियों में–जैसे कि मसूढो की सूजन, खून आना, कमजोर हो जाना, हिलना, पायोरिया की प्रथमावस्था।

घटक : प्रति १०० ग्राम:—

	ग्राम		ग्राम
अखरोट छिलके	४	कथ्था	४
अकलकरा	४	लौंग	४
उपलसरी	४	माजूफल	४
बादाम	४	मौलसरी	४
बहेडा	४	शुद्ध निलाथोथा	४
चोक	४	निगुडी	४
अनार छिलके	४	नगोड पचांग	४
अनार फल छिलके	४	पेपिया	४
गौरख मुंडी	४	फूदिना	४
गुलाब फूल	४	सेंधा नमक	४
कायफल	४	शुद्ध फिटकरी	४
कपूर	४	वज्रदंती	४
खेर	४	गुलाबजल सेभावितं	

भावना :

सेवन विधि : प्रतिदिन १।२ चम्मच पाउडर अंगुली या ब्रश से लगाइए। सवेरे और रात को सोने से पहले।

पेकिंग : छोटी शीशी, बडी शीशी, फेमिली साइझ

षड् रस और सप्तधातु की त्रुटियों के सिद्धान्त पर बूटी से इलाज।

जे. जे. २२ (टिकी)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : मधुमेह के लिए हमारा खास तौर से हजारों मरीजों के उपर परीक्षित योग। मूत्रशर्करा एवं रक्त-शर्करा में उपयोगी।

सावधानी : कुछ नहीं। मात्रा बढाई जा सकती है। शर्करा-हीनता का कोई भय नहीं है।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक भस्म १०० पुटी	१०	करेला	२०
आमला	१०	निमपत्र	१०
भीमसेनी कपूर	१	लिंबोली बी	१०
डोडवा सार	१०	मामेजवा	१०
गोरखमुंडी	१०	बडा गोखरु	१०
गुडमार	२०	मेरुश्रृंग भस्म	१५
गुगल	४०	प्रवाल	१०
जांबु बी	२०	सप्तपर्ण	१०
जसद भस्म	५	सप्तरंगी	१०
काला तिल	१०	शिलाजीत	२०
काकच-बी	९	शिमलामूल	१०
कान्त लोह	१०	श्रीपंख	१०
कपर्दिका भस्म	५	त्रिवंग भस्म	५
विदारिकंद	१०	विजयासार	१०

भावना : सिताफली पंचांग, कडुनिंबपत्र, बिलपत्र, छोटा-चिरायता, गुडमार, उम्रापत्र, अरणी, कसूंदरा, पिलुडी-जांबुनी।

सेवन विधि : नए रोगियों को २/२ टिकीयां सवेरे-शाम भोजन के पश्चात। पुराने रोगियों को सहायक औषधि के रुप में उसी मात्रा में शुरु करे। रोगी का निरंतर निरीक्षण करते रहना चाहिए और जैसे रोगी की शारीरिक स्थिति में सुधार नजर आता जाये और शर्करा का प्रमाण घटता जाय वैसे इन्स्युलीन की मात्रा कम करते जायें। यही चिकित्सा तबतक चालू रखें जबतक पूर्ण रुपसे इन्स्युलिन की आवश्यकता रोगी को न रहे।

पेकिंग : टिकीयां :—

४०, १००, ५००, १०००

असामान्य और पुराने कंठ विकार का चूसने से इलाज।

कोफोल (गोली)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की चूसनेकी गोली)

उपयोग : गले की खराश, सूखी या, कफयुक्त खांसी, बल्गम को पतला बनाके निकालदेती है। गले को साफ करके स्वर सुधारती है।

घटक : प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.
आंबा हरिद्रा	१०
बहेडा	१०
बरास	४
दालचीनी	२
इलायची	१०
चणोठीपत्रक	५
जायपत्री	५
ज्येष्टीमध	१०
ज्येष्टी मध धन	४३
काकडा सींगी	१०
चणकबाब	५
कथ्था	१०
लोंग	१०
सफेद मिर्च	१०
पिपरमेंट फूल	२
पिपल	२
टंकणखार	२
सौंफ	१०

सेवन विधि : एक, एक गोली दिन में ५ से ६ बार मुंह में रखकर रस चूसें।

पेकिंग : गोलियां

४०, १००, ५००, १०००

बढ रहे बच्चे के कल्याण के लिये एक आदर्श ट्रोपिकल टोनिक।

लिक्विटोन (प्रवाही)

(रास्पबेरी शोरम के साथ)

उपयोग :	बच्चों के लिए उत्कृष्ट टॉनिक। बच्चों की आवश्यक वृद्धि न होना, कमजोरी, सूखा, चूने की कमी, लोहे की कमी, विटामिन्स का अभाव। भूख कम लगना, अरुची, अजीर्ण व लालास्राव ज्यादे होना।
घटक :	प्रति १०० मि. लि. :—
	मि. लि.
	अंगूरासव २५
	अरविंदासव १०
	अश्वगंधारिष्ट १०
	बालकडु १५
	कुमारीआसव १०
	लोहासव ३०
	प्रवालपिष्टि ३२० ग्रा.
सेवन विधि :	बच्चों को २ से ३ चम्मच ३ से ४ बार उतने ही जल से। शिशुओं को १।२ से १-१।२ चम्मच दिन में ३ से ४ बार दुगुने जल से।
पेकिंग :	मि. लि. २००, ४००

लिवर की शिथिलता को दूर कर सामान्य लिवर-क्रिया उत्पन्न करती हैं और स्वस्थ बनाती हैं।

लिवोमिन (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

यकृत संबंधी शिकायतें पिलिया, ज्यादा भोजन करने से, मद्यपीने से या ज्यादा मेहनत करने से यकृत में आई खराबियां, यकृत की सूजन के कारण तन्दुरस्ती बिगडना। यकृत की क्रियाका नियमन करके यथावत् स्थिती स्थापित करने के लिए।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
आरोग्यवर्धिनी	३०	केसुडाफूल धन	२०
गिलोय धन	१०	पुनर्नवा धन	२०
कलंभा धन	२०	पुनर्नवा मंडुर धन	२०
कडु धन	२०	रक्त रोहितक धन	२०
कुंवारपाठा धन	२०	शक्कर	१०
मेंहदी धन	२०	श्रीपंखाधन	२०
नवसागर धन	६	सोनागेरु	२०

सेवन विधि :

बडों को २ टिकीयां दिन में २ से ३ बार जल से। बच्चों को आधि मात्रा।

पेकिंग :

टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

लिवर सम्बंधी गडबडी के उपचारार्थ बच्चों के लिये ।

लिवोमीन (ड्रॉप्स)

उपयोग :

छोटे बच्चों के लिए खास तौर से यकृत की खराबी के लिये विशेष उपयोगी ।

यकृत का बढना, भूख न लगना, बच्चोंका सामान्य बढना, कमजोरी, सूकजाना, दस्त साफ न होना, पेट फूलना, पेट के उपर हरी नसें दिखना, सुस्तीपना, पीलिया, खूनकी कमी, लीवरकी खराबीकी वजह से खून न बनना ।

बडों को भी उपर्युक्त शिकायतों में लाभदायक है ।

निम्न द्रव्यों द्वारा अर्क पद्धति से निर्मित ।

भृंगराज, धनिया, गुलडावरी, गुलाबपुष्प, कडात्वक, कालीतुलसी, मेंहदीपान, निसोत, पिपल, पित्तपापडा, रोहितक, सप्तरंगी, श्रीपंखा, और सोंठ-हरचीज २।२ ग्राम। गिलोय, काकमाची, कालमेघ, पुनर्नवा वायवडींग ४।४ ग्राम।

घटक :

	ग्राम		ग्राम
भृंगराज	२	निसोत	२
धनिया	२	पिपल	२
गिलोय	४	पित्तपापडा	२
गुलाबपुष्प	२	पुनर्नवा	४
गुलडावरी	२	रोहितक	२
काकमाची	४	सप्तरंगी	२
कालीपाठ	२	श्रीपंखा	२
कालीतुलसी	२	सोंठ	२
कडात्वक	२	वायवडींग	४
मेंहदीपान	२	कालमेध	४

सेवन विधि :

छोटे बच्चोंको ५,५ बूंद सवेरे-शाम दूध, फलोंके रस या पानी से । ५ सालसे उपरके बच्चोंको १०,१० बूंद,

बडो को आधा चमच दिनमें २ से ३ बार.

पेकिंग :

मि. लि.

३०, १००, २००, ४००

लिवर सम्बंधी गडबडी के उपचार के लिये।

लिवोमीन (सीरप)

उपयोग :

यकृतका बढना, कब्जियत, थकान लगना, बच्चोंका सामान्य बढना, सूक जाना, पीलिया, बिमारीके या ओपरेशन बाद की कमजोरी, खूनकी कमी, लीवरकी खराबीकी वजह से खून न बनना।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
भृंगराज	२५०	निसोत	२५०
धनिया	२५०	पिपल	२५०
गिलोय	५००	पित्तपापडा	२५०
गुलाबपुष्प	२५०	पुनर्नवा	५००
गुलडावरी	२५०	रोहितक	२५०
काकमाची	५००	सप्तरंगी	२५०
कालीपाठ	२५०	श्रीपंखा	२५०
कालीतुलसी	२५०	सोंठ	२५०
कडारवक	२५०	वायवडींग	५००
मेंहदीपान	२५०	कालमेघ	५००

सेवन विधि :

बच्चोंको ०। से ०।। चमच दिन में दो बार दूध-पानी या फलों के रस साथ।

बड़ोको १ से २ चमच सुबह शाम दूध-पानी या फलों के रस साथ।

पेकिंग :

मि. ग्रा.
२००

गर्भाशय के चक्रीय कार्य को सामान्य करती है और मासिक धर्म को व्यवस्थित करती हैं।

ल्युनारेक्स (टिकी) (साधारण)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : कष्टार्तव, मासिक कम आना, रुक-रुक कर आना, किसी भी कारण से रुका हुवा मासिक फिर से वगैर तकलीफ चालू करने के लिए निर्दोष। कमजोर स्त्रिओं को यदि थोडा या अनियमित मासिक आता हो तो साथ में एम २ टोन (M2 Tone) देना चाहिए।

सावधानी : सगर्भावस्था की शंका होने पर नहीं देना चाहिए अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
आसाडियो	२०	मेथी	२०
दालचीनी	१०	उलटकंबल	४०
इलायची	६	रायणबीज	२०
एलुवा	२०	सोंठ	२०
गाजरबीज	२०	सूवा	२०
हिराकसी	२०	वांस	२०
कलौंजी जीरा	२०		

भावना : उपरोक्त सभी द्रव्यों का क्वाथ।

सेवन विधि : दो टिकीयां २ से ३ बार दूध से। अनियमित मासिक में मासिक आने की संभावित तिथि से एक सप्ताह पूर्व से देना चाहिये। ज्यादे माहिती के लिए विस्तृत साहित्य अवश्य देखें।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

मासिक स्राव को ठीक करती है और उसकी अवधि नियंत्रित करती है तथा चाहने पर मासिक कराया जा सकता है

ल्युनारेक्स (टिकी) (तेज)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : बंध मासिक फिरसे चालू करने के लिये।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि ग्राम.		मि. ग्राम.
असाडियो	२०	उलटकंबल	३०
दालचीनी	१०	रायणबीज	२०
एलुवा	२०	सरगवाबीज	१०
गाजरबीज	२०	सोंठ	१०
हिराकसी	२०	सूवा	२०
कलौंजीजीरा	२०	टंकणखार	६
काला तील	२०	बांस	२०
मेथी	२०		

भावना : टंकण को छोड बाकी सभी चीजों का काढा।

सेवन विधि : दो टिकीयां ३ से ४ बार, २ या ४ रोज तक पानी से दें।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

जवानी से लेकर बुढापे तक हीन स्वास्थ्य की शिकायतों के लिये स्वास्थकर और सभी रोगों में लाभकारी ट्रोपिकल टोनिक।

मेनॉल (अवलेह)

उपयोग : शामक, शक्तिदायक, आंतो में छाले हो जाने पर, बीमारी के बाद उत्कृष्ट टॉनिक, छोटी या बड़ी माता निकलने पर बच्चों के शरीर में जो अतिरिक्त उष्णता बढ जाती है उसको दूर करके शक्ति देती है। सगर्भावस्था में खून की कमी होने पर, अम्लपित्त व सीने में जलन होने पर।

सावधानी : दमे में जिनको ज्यादे कफ निकलता हो उनको न दे।

घटक : अष्टवर्ग ४७ द्रव्यों का काढा, १० प्रक्षेप द्रव्य, केलश्यम : आंवले, लोहभस्म, शिलाजीत, और आवश्यक रेचक द्रव्य।

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक भस्म	०.३	मंडुर भस्म	०.५
तेजनस् का मिश्रण	४.७	नागकेशर	०.४
आंवला सार (धीमे तला हुआ)	२०.७	पीपली	०.५
		प्रवालपिष्टि	०.५
दालचीनी	०.४	शिलाजित	०.५
इलायची	०.४	तालिसपत्र	०.४
६० जडीबुटि ओंकासार	२०.०	तमाल पत्र	०.४
गलोसत्व	०.४	वगभस्म	०.५
जायपत्री	०.४	वंशलोचन	१.०
लवंग	०.४	शरबत	क्युअेस
मधु	३.०		

सेवन विधि : बडों के लिए सबेरे और रात को सोते समय १,१ चम्मच दूध से बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग : ग्राम
२००, ४००, २०००

उपचार के साथ ट्रोपिकल टोनिक जो अंतडियों में टोक्सीमिया और पैतिक अव्यवस्था से उत्पन्न गडबडी का उचित इलाज

मेनॉल (टिकी)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : मेनॉल अवलेह के अनुसार। मधुमेह के रोगियों के लिए शर्करा हीन टिकीयां।

सावधानी : दमे में जब ज्यादे वलगम आता हो तब न दे।

अष्टवर्ग ४७ द्रव्यों का काढा, १० प्रक्षेप द्रव्य केल्श्यम, आँवले, लोहभस्म, शिलाजीत, और आवश्यक रेचक द्रव्य।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
आमला	२०	प्रवाल पिष्टि	८
अश्वगंधा	१५	पुनर्नवा	४
अष्टवर्ग	४८	सफेद मुसली	४
वलदाना	४	शंखावली	८
चित्रक	४	शतावरी	१२
गंगेटी	४	शिलाजीत	४
गरमाला	४	श्रीरंग भस्म	२
गोखरु	१०	शुक्ति भस्म	२
६० जडी बुटिओं का सार	४८	सुदर्शन	२०
कोंच	४	सोंठ	८
लघु वसंत मालती	२	सुतशेखर	२
लोह भस्म	१	सुवर्ण माक्षिक	४
मंडुर भस्म	४	त्रिवंग भस्म	४
मीर्चे	८	वाकेरी	१५
निशोत्तर	८	वंगभस्म	१
पीपली	८	वाराही कंद	४
पीपली मूल	८	विदारी कंद	८
ब्राम्ही	८		

सेवन विधि : वडो को २ टिकीयां दिन में २ से ३ वार जल या दूध से। वचों को आधी मात्रा।

पेकिंग : टिकीयां :—

४०, १००, ५००, १०००

स्त्रियों की योनि और पेशाब से आने वाले विकार युक्त पदार्थ के स्राव को दूर करती हैं ।

एम २ टोन (प्रवाही)

उपयोग :

श्वेतप्रदर रक्तप्रदर, व मासिक धर्म की अनियमितता में खास उपयोगी, । कुमारीकाओं में कमजोरी, पचन संस्थान की खराबी, रक्त की कमी इत्यादी कारणों से प्रदर होने पर रक्तप्रदर, मासिक का अधिक आना, या अधिक दिनों तक आने पर इस औषधि के साथ हमारी "पोझेक्स" टिकियां व्यवहार करने से शीघ्र ही लाभ होता है ।

घटक :

प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अमृतारिष्ठ	१०
अशोकारिष्ठ	२०
चंदनासव	१०
दशमूलारिष्ठ	२०
लोध्रासव	२०
उशिरासव	२०

सेवन विधि :

१।२ बडा चम्मच उतने ही जल से भोजन के आधे घंटे पूर्व ।

पेकिंग :

मि. लि.

२००, ४००

केंद्रीय स्नायु-मण्डलकी गडबडी को ठीक करती हैं, मस्तिष्क कोठरियों के विद्युत कार्य को सामान्य स्थिति में लाती है।

नेड (टिकी)

(प्रति १९२ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : मृगी के लिए नविन आविष्कृत योग, वातशामक, दिमागी कमजोरी।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
अकीक	१२८
ब्राह्मी स्वरस	३२
उग्रगंधा	३२

सेवन विधि : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

पेकिंग : बड़ो को २ टिकीयां दिन में ३ से ४ बार जल से। बच्चों को १ से २ टिकी दिन में २ से ३ बार जल से।

बचपन की कमजोरियों को ठीक करती हैं, स्नायुमण्डल को नई जिन्दगी देती हैं और आत्मविश्वास को बढाती है।

निओ (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की रुपेरी कोटेड टिकी)

उपयोग :

स्नायुदौर्बल्य, स्वप्नदोष, हाथ व पाँव के तलवों में पसीना होना और थकावट इत्यादि।

औरतों में यदि कमर का दर्द, श्वेतप्रदर से न हों–लेकिन बार २ प्रसूतियां होने से, या गीली जगह में काम करने से, या प्रसूति के बाद योग्य देखभाल न की जाने से–हो तो उत्कृष्ट उपाय है।

वृद्धावस्था में साधारण तौर से होने वाला हाथ पैरों का या कमर का दर्द व कमजोरी मेहसूल करना इत्यादि—के ऊपर विशेष लाभदायक।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
शुद्ध हिंगूल	१५	प्रवाल पिष्ठी	१५
ज्येष्ठी मध	१५	शतावरी	७२
शुद्ध तिंदूक	५	शिलाजीत	१५
शुद्ध कौंजबीज	१९	वंगभस्म	५
लोहभस्म	१५		

भावना : गंगेरन, हरडे का क्वाथ और प्याज का रस।

सेवन विधि : दो टिकीयां दिन में २ से ३ बार सिर्फ दूध से।

नोट :—यदि पेट में कीडे हैं या बंधकोष रहता है तो उसको पहले ठीक करें–बाद में 'निओ' का सेवन करना।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५०० १०००

अनपेक्षित चर्बी को नष्ठ करती है और स्थूलकाय शरीरको ठीक आकार में लाती है।

ओबेनील (टिकी)

(प्रति १६५ मि. ग्रा. की कोटेड गोली)

उपयोग :

मेदो रोग (खान-पान से होने वाला) भूख बढाती है। धत्वग्निओं के कार्य का नियमन करती है, जमा हुए मेद को जलाती है। शोषण कार्य को भली भांती करती है। पाचन शक्ति और मल निष्काशन क्रिया सुधार कर मेद को बनने नहीं देती। खान-पान में कोई निषेध नहीं है।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
शुद्ध गंधक	३०
गोरखमुंडी धन	५०
कांचनार गुगल	३०
केशरादी	३६
किशोरगुगल	३०
पुनर्नवा घन	५०
त्रिफलागुगल	३०

भावना :

महामंजिष्ठादि व महासुदर्शन चूर्ण।

सेवन विधि :

दो टिकीयाँ दिन में २।३ बार दूध से। बच्चों को आधी मात्रा भोजन के पूर्व, साथ या बाद में फौरन पानी नहीं पीना चाहिए। दो भोजन के बीच खूब पानी पीजिए।

पेकिंग :

टिकीयाँ

४०, १००, ५००, १०००

भूख, पाचन-शक्ति, नियमित आंत-क्रिया और गाढ़ी नींद उत्पन्न करती है।

ओजस (प्रवाही)

(मधुर अग्नि प्रदीपक व पाचक)

उपयोग :

अरुची, थकावट, कमजोरी बिमारी के बाद उत्कृष्ट टॉनिक, पाचक रसों का श्राव बढाता है, पोषण व शोषणक्रिया सुधरती है, शक्ति और स्फूर्ति बढती है। वजन बढता है, रक्तकणों की वृद्धि होती है। गाढ निद्रा आती है। मल निस्सारक क्रिया ढंग से होती है और इन कारणों से प्रसूताओं में दूध की वृद्धि होती है।

अजीर्ण के दस्तों को रोकता है।

घटक :

प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अश्वगंधारिष्ट	१८
भृंगराजासव	१८
लोहासव	१८
शतावरी सार	१८
त्रिफलारिष्ट	१०
वाराहीकंद सार	१८

सेवन विधि :

बडो को १।२ बड़ा चम्मच उतने ही जल से दीपन कार्य के लिये भोजन से पुर्व व पाचक कार्य के लिए भोजन के बाद। बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग :

मि. लि.

२००, ४००

स्वस्थ मानसिक और शारीरिक स्थिति उत्पन्न कर जवानी के स्वास्थ्य को फिर से निखारता है।

ओजस (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : ओजस प्रवाही के अनुसार। मधुमेह के रोगियों के लिए शर्करा रहित टिकीयां।

घटक : प्रति टिकी .—

	मि. ग्रा.
अश्वगंधारिष्ट क्वाथ घन	४५
भृंगराजासव	४५
लोहासव	४५
शतावरी	४५
त्रिफलारिष्ट	३१
वारादीकंद	४५

सेवन विधि : बडो को १ से २ टिकीयां पानी से। दीपन कार्य के लिए भोजन से पुर्व व पाचक कार्य के लिए भोजन के बाद। बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

योनि और मूत्र-मार्ग स्थलों को ठीक करती है और इनके व्यवधानों को दूर करके इनके कार्यों को संचालित करती हैं।

ओरक्लिन (टिकी)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

मूत्र संस्थान के समस्त रोगों पर। पौरुष ग्रंथी-बढ़ने पर होने वाले रोग, वृक्कों की बिमारियां, पेशाब में फोस्फेट या अल्बुमीन आना।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्राम.		मि. ग्रा.
वरुडमूल घन	१०	पाषाणभेद	२०
दर्भमूल घन	१०	साटोडीमूल घन	१०
गोखरू	१०	श्रीपंखामूल घन	१०
ककडी के बीज	२०	शेरडीमूल घन	१०
कमल घन	१०	शिलाजीत घन	२०
कांसडामूल घन	१०	सूर्यक्षार घन	५
नेतर मूल घन	१०	यवक्षार घन	५

सेवन विधि :

बडो को २ टिकियाँ दिन में दो से तीन बार जल से। बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग :

टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

कफ दोष की शिकायत और उससे उत्पन्न गडवडी की विशिष्ट दवा ।

पेइनेक्स (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : पुराना जुकाम, गलेकी सूजन, श्वासनलिका प्रदाह, टोन्सीलस, नासामार्गकी सूजन, वात कफज व्याधियां, शरीर में दर्द इन्फलुएन्जा इत्यादि ।

सावधानी : कुछ नहीं ।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
अजवायन	२०
आकपुष्प	४०
गोदंती भस्म	२०
गोरोचन	३
केशर	३
मृगश्रृंगभस्म	२०
नक छिंकनी	४०
निसोथ	२०
पिपलामूल	४०
सप्तपर्णघन	१०
सर्जीखार	२०
सीतोपलादि	२०
सुदर्शनघन	१०

सेवन विधि : बड़ोको २ गोली दिन में ३ बार गर्म जल या चाय या कॉफी से ।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

पॉलरिविन (गोली)

सशक्त और रसाई कामोत्तेजना उत्पन्न करती है।

(प्रति २२४ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : जातीय कमजोरी, शुक्रक्षय, मानसिक कारणों से आई जातीय कमजोरी, शीघ्रपतन, वीर्यका पतलापन, शुक्राणुओं की कमी कमजोर शुक्राणु-इत्यादि।

स्त्री एवं पुरुष दोनो के लिए उपयुक्त।

घटक : प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक भस्म	७	कस्तुरी	३५
अकीक भस्म	७	केशर	३५
अकलकरा	१८	नागकेशर	४
अम्बर	३५	पीपल	४
गिलोयसत्व	१८	पीपलामूल	४
जायफल	१८	प्रवालपिष्टि	७
कहेरबापिष्टि	७	पूर्णचंद्रोदय	७
चणकबाब	१८		

भावना : ज्येष्टीमध, सौफ, कश्वगंधा, चंदन, शंखावली, धनिया अंकोलमूल एवं ब्राह्मी स्वरस।

सेवन विधि : एक से दो गोली सवेरे शाम दूध से।

पेकिंग : गोलीयां

पीला कोटिंग

२५, १००, ५००, १०००

चांदी का कोटिंग

२५, १००, ५००

सुवर्ण कोटिंग

२५, १००, ५००

नवजवानी के लिये उत्तम एफ्रोडिसियक और टानिक।

पॉलरिविन (टिकी) (तेज)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड व सुवर्ण कोटेड गोली)

उपयोग: जातीय कमजोरी के लिये उत्कृष्ट-शक्ति-स्फूर्ति एवं चैतन्य प्रदानकर्ता-स्नायुदौर्बल्य के कारण रतिशक्ति में न्यूनता-शीघ्रपतन, मानसिक एवं शारीरिक शक्ति-स्फूरक-न्युन रक्तचाप में उपयोगी-जिन मरीजो को कई प्रकार की दवाईयां देनेके बावजूद भी लाभ न होता हो-ऐसे मरीजो के लिये इश्वरी प्रसाद।

घटक:

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रकभस्म	४	लोंग	१
अश्वगंधा	५	लोहभस्म	२
बारासकपूर	०.५	मकरध्वज	१
चिकनीसुपारी	५	कालीमीर्च	१४
तज	१४	नागकेशर	१४
दालचीनी	७	पिपल	१४
गंगेटी	५	पिपरामूल	१
गिलोयसत्व	७	पोस्तडोडा घन	७
हरताल भस्म	०.५	सीतोपलादि	५
जायपत्री	१	सोंठ	१
जायफल	१४	सुवर्णभस्म	०.५
जुंदबेदस्त	१.००	माक्षिक	२
कौचेदीन	९.५	तमालपत्र प्रति	१४
केशर	१	बंगभस्म	२

तांबूल स्वरस, पोस्तडोडा क्वाथ।

सेवन विधि: एक से दो टिकीयां सवेरे शाम दूध से।

पेकिंग: टिकीयां

कोटेड

२५, १००, ५००, १०००

सुवर्ण कोटींग

२०, १००, ५००, १०००

बच्चों के पेट को ठीक करने के लिये सुस्वादू रसायन।

पेडिलेक्स (प्रवाही) (साधारण)

(गुलाब की खुश्बु सहित)

उपयोग : बच्चों के लिए मृदु विरेचन। बच्चों एवं शिशुओं में बंधकोष मिटाने के लिए।

घटक : प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अभयारिष्ट	२०
अमृतारिष्ट	२०
आरग्वधारिष्ट	२०
सेनायमूल शर्बत	२०
त्रिफलारिष्ट	२०

सेवन विधि : बच्चों को १ से २ चम्मच उतने ही पानी से रात को सोते समय। शुरु मे २ से ३ चम्मच भी दे सकते हैं। बाद मे मात्रा कम कर दें। शिशुओं को आधी मात्रा दें

पेकिंग : मि. लि.

२००, ४००

शिशु और बच्चों की दस्त लाने वाली बूटी का बना निर्दोष रसायन।

पेडिलेक्स (प्रवाही) (तेज)

(गुलाब की खुश्बु सहित)

उपयोग : पेडिलेक्स (साधारण) के अनुसार। यह औषधि पेडिलेक्स (साधारण) से विशेष तेज है।

घटक : प्रति १०० मि लि. :—

	मि. लि.
अभयारिष्ट	१९
अमृतारिष्ट	१९
आरग्वधारिष्ट	१८
जमालगोटा शर्बत	३
सोनामूल शर्बत	१९
सोंठ का शर्बत	३
त्रिफलारिष्ट	१९

सेवन विधि : बच्चों को १ से २ चम्मच दुगुने जल से।
शिशुओं १/२ चम्मच उतने ही जल से।

पेकिंग : मि. लि.
२००, ४००

चक्रीय या अन्तर्चक्रीय गर्भ के रक्तस्राव को रोकता है और उसे सामान्य स्थिति में लाता है।

पोझेक्स (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

मासिक धर्म अधिक मात्रा में आना या अधिक दिनों तक आना, रक्तार्श, इन टिकीयों के साथ यदि हमारा एम २ टोन व्यवहार किया जाय तो शीघ्र ही लाभ मिलेगा।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
घउंला	२०
हिराबोल	४०
माजूफल	११
मोचरस	१५
नागकेसर	४०
कौंच	२०
शुद्ध स्वर्णगैरिक	४०
शुद्ध स्फटिका	२०
प्रवालपिष्टि	५०

भावना :

गोखरु, कमल माजूफल, मेंहदी, मोचरस, एवं तांदलजा।

सेवन विधि :

दो से तीन टिकीयां ३ से ४ बार मीठे दूध से। अधिक तीव्र रोग में हर दो-दो घंटे में २, २, टिकीयां दें जब तक आराम न हों। अधिक १२ टिकीयां रोज दे सकते हैं

पेकिंग :

टिकीयां :—

४०, १००, ५००, १०००

हर प्रकार के भीतरी या बाहरी रक्त-स्राव का अचूक इलाज ।

पोझेक्स (टिकी) (तेज)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड गोली)

उपयोग :

योनिमार्ग से रक्तस्राव, प्रसूति के बाद का भयंकर रक्तस्राव, गर्भपात अत्यार्तव-मासिक धर्म बंद होनेके पूर्व-या अन्य कारणोंसे होनेवाले रक्तस्राव ।

खांसीमें, बलगम के साथ खून आना, आंत्रवर्ण के कारण खून आना, इत्यादि में उपयोगी ।

ऊर्ध्व और अधोगामी रक्तस्राव में समान रुपसे गुणकारी । एक ही रोज में असर ।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
चंद्रकला रस	१०	नागकेशर	१०
दारुहरिद्रा	१०	पोस्त डोडेका घन	५०
गर्भपालरस	१०	प्रवालपिष्टि	१०
गोदंतीभस्म	२०	रक्तबोल	१०
कुकुटांडत्वक भस्म	१०	रसवंती	४०
माजूफल	२०	सोनागेरु	२०
माक्षिक भस्म	१०	शुद्ध स्फटिका	१०
मोचरस	२०	जहरमोहरापिष्टि	१०

भावना :

अनारत्वक, धावडीपुष्प, गिलोय, जेठीमध, कटसरैया, लज्जालु, लोध्र, नीलकमल, सेमल ।

सेवन विधि :

दो, दो गोली प्रति ३ घंटे से । या आवश्यकतानुसार ।

पेकिंग :

गोलियाँ

२५, १००, ५००, १०००

अतिमेद्यता और रक्त को विषाक्त होने से रोक कर चर्म रोग से बचाती है।	# प्युरिला (प्रवाही)
उपयोग :	रक्त शुद्धीकरण हेतु। आवश्यकता अनुसार वाकेरी कंपाउन्ड टिकीयां (सुवर्ण युक्त) या अर्टिप्लेक्स टिकीयों के साथ में व्यवहार करने से शीघ्र ही लाभ होता है।
घटक :	प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. लि.
अभयारिष्ट	५
अनंतमूल घन	१०
चंदनासव	५
गिलोयसार	१०
खदिरारिष्ट	१०
महामंजिष्ठादि	१०
निंबसार घन	१०
पुनर्नवासव	५
रक्तशोधकारिष्ट	१०
सारिवाद्यरिष्ट	५
सप्तसारादिसार	५
उशीरासव	५
विडंगारिष्ट	१०

सेवन विधि :	तीन चम्मच दिन में २ से ३ बार सप्रमाण जल से। बच्चों को आधी मात्रा दें।
पेकिंग :	मि. लि. २००, ४००

आंत क्रिया को सुधार कर कब्जियत दूर करती है।

रेग्युलेक्स (टिकी) (साधरण)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : कमजोर या नाजुक प्रकृति के मरीजों के लिये हलका विरेचन। खास तौर से छोटे बच्चों, व सगर्भा स्त्रियों के लिए उपयुक्त। पतले दस्त नहीं होते।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
भृंगराज	२५
एलुवा	३०
गिरमाला	२५
हिमज	२५
हिंग	४
कालादाना	४०
निशोथ	३०
रेवंचीसार	२५
सनाय जड	२५
टंकण खार	२
त्रिफला घन	२५

भावना : भृंगराज, हिमज, सनाय जड, त्रिफला।

सेवन विधि : एक से दो टिकीयां रात को सोते समय जल से।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

आंत का भारीपन दूर करती है और तनाव कम करती हैं ।

रेग्युलेक्स (गोली) (तेज)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : क्वचित बंधकोष के लिए, खास तौर से शारीरिक श्रम करने वालों और मांसाहारी मरीजों के लिए ।

सावधानी : सगर्भावस्था, ज्वर की तीव्रवस्था, व्यथा, बच्चों, और पाचन शक्ति कमजोर हों, उनको न दी जाय ।

घटक : प्रति गोली :—

	मि. ग्रा.
गंधक	३
जमाल गोटा	६०
कथ्था	६०
पीपलनीग्रम	४०
कज्जली	३
पीपल	४०
सोंठ	४०
टकण खार	१०

भावना : गिरमाला, भृंगराज और त्रिफला ।

सेवन विधि : एक गोली रातको सोते समय गरम जल से २ से ३ बार पतले दस्त हो जाएंगे ।

पेकिंग : गोलीयां

४०, १००, ५००, १०००

वात और उस जाति के रोगों को दूर करती हैं।	# रिमानील (टिकी) (प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)
उपयोग :	आमवात, संधिवात, सायटिका, सभी प्रकार के वातिक शूल व दर्द पर।
सावधानी :	सगर्भावस्था में न दें।
घटक :	प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अम्बर	२	पीपल	१०
गोदंतीभस्म	२०	समीरपन्नग रस	१५
कस्तूरी	२	शुद्ध गुगल	४०
शुद्ध तिंदूक	२०	शुक्ति भस्म	५
लोंग	१०	सुवर्णपान	१
लोबान फूल	२०	शुद्ध टंकण खार	५
मल्ल सिन्दूर	१०		

भावना :	अकलकरा, अश्वगंधा, ब्राह्मी, चोपचीनी, मालकांगणी, पुनर्नवा, रास्ना, व वच।
सेवन विधि :	एक से दो टिकीयां सवेरे शाम दूध से। तीव्रावस्था में २ टिकीयां दिन में ३ बार देवें।
पेकिंग :	टिकीयां ४०, १००, ५००, १०००

उच्च रक्तचाप को सामान्य करती है।

सपेरा (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

उच्च रक्तचाप, धमनियां और मूत्रवाहिनियों की खराबियों के कारण बढ़े हुवे रक्तचाप के लिए विशेष उपयोगी—रक्तचाप का नियमन करती है।

घटक :

प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
चोपचीनी	५
शुद्धगंधक	४०
गोखरु	२०
हरडे	२०
इन्द्रवारुणीमूल	१०
जटामांसी	१०
कटु	३६
खुरासानी अजवायन	५
पुनर्नवा	२०
पीपलामूल	२०
सर्पगंधा घन	२०
वच	२०

सेवन विधि :

एक टिकी दिन में ३ बार या २ टिकीयां दिन में २ बार पानी से।

पेकिंग :

टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

अस्वाभाविक तनाव का, तुरंत या बाद में कोइ बुरा असर डाले बिना प्रभावशाली इलाज।

सपेरा (टिकी) (तेज)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : अधिक बढ़े हुए रक्तचाप के लिए खास तौर से उपयोगी। हृदयाकुंचनचाप जब १६० से उपर हो जाय उस समय सपेरा की जगह ये तेज टिकीया वापरें। धमनियों की खराबी या मूत्रनलिकाओं की खराबी के कारण हुए रक्तचाप में विशेष उपयोगी।

सावधानी : निर्धारित रक्तचाप का आंक आ जानेपर ये टिकीयाँ बंद कर दें और सपेरा टिकीया (साधारण) १।१ टिकीया सवेरे-शाम लेते रहे।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अश्वगंधा	१०	कबाबचीनी	५
चोपचीनी	५	सफेद मिर्च	१०
शुद्धगंधक	२५	पिपलामूल	२०
गोखरु	२०	प्रवालपिष्टि	१०
हरडे	२०	पुनर्नवा	२०
इन्द्रवारुणीमूल	१०	सर्पगंधाघन	१००
जटामांसी	१०	वच	२०
कुटकी	३५		

सेवन विधि : एक से दो टिकीया दिन में २ या ३ वार पानी से आवश्यकतानुसार। बाद में कम कर देवें।

पेकिंग : टिकीयाँ

४०, १००, ५००, १०००

अस्थमा और उसके फलस्वरुप अन्य विकारो का विशिष्ट इलाज ।

स्पाझ्मा (प्रवाही)

उपयोग : श्वास, कफ को पतला बनाकर स्राव करता है और दमे को शांत करता है ।

सावधानी : कुछ नहीं । यदि ज्यादे दिनों तक भी लगातार दिया जाय ।

घटक : प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. ग्रा.
अपामार्ग	२००.००
यवक्षार	२००.००
टंकण	२००.००
अर्जुनारिष्ट	८
अरडुसा शर्बत	१८
भारंग्यादि	९
दशमूलारिष्ट	३.५
गोजीव्यादि	८
कंटकार्यादि	८
कुमारी आसव	९
कनकासव	३.५
पुनर्नवासव	८
सितोपलासव	८
सोमासव	८
त्रिफलारिष्ट	८

सेवन विधि : तीन चम्मच दिन में २ से ३ बार समभाग जल से । बच्चों को आधी खुराक ।

पेकिंग : मि. लि.
२००, ४००

पीडायुक्त मासिक को ठीक कर उसे नियमित करती है।

टीनापेईन (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :	कष्टार्तव, अनियमित व कम मासिक आनेपर।
घटक :	प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
एलुवा	५०
शुद्ध हिंग	५०
हिराबोल	२८
हिराकसी	५०
शिलाजीत	२८
शुद्ध टंकणखार	५०

भावना :	कुंवारपाठा का रस।
सेवन विधि :	दो टिकीयां दिन में २ से ३
पेकिंग :	टिकीयां ४०, १००, ५००, १०००

अशांत मानसिक स्थिति को ठीक कर मानसिक शांति लाती है।

ट्राक्विनिल (टिकी) (साधारण)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : चिंता, मानसिक, अस्वस्थता, अनिद्रा, और अन्य वातिक प्रकोप के लक्षणोंपर।

सावधानी : कुछ नहीं।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
अकीकभस्म	६०
ब्राह्मीधन	२०
किडामारी	२०
खुरासानी अजवायन	५०
पिपल	६
शंखावली घन	६०
सूवादाणा घन	१०
वच	१०
वंगभस्म	१०
सौंफघन	१०

भावना : गुलाबजल, एवं ब्राह्मी स्वरस।

सेवन विधि : दो, दो टिकीयां दिन में २ से ३ बार जल से। बच्चों को आधी मात्रा दें।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

अशांत मानसिक स्थिती को ठीक कर मानसिक शांति लाती है।

ट्रांकिनिल (टिकी) (तेज)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड गोली)

उपयोग : चिंता, मानसिक, अस्वस्थता, अनिंद्रा और अन्य वातिक प्रकोप के लक्षणों पर।

सावधानी : कुछ नहीं यदि प्रमाणित मात्रा ज्यादे दिन तक भी दी जाय।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अकीक भस्म	४०	पिपल	६
अश्वगंधा	१०	सर्पगंधा	२०
ब्राह्मी घन	१०	शंखावली घन	४०
गोदंती	२०	सूवादाणा घन	५
जटामांसी	२०	वच	५
जीवती	२०	बंगभस्म	५
किंडामारी	१०	सौंफ घन	५
खुराशानी अजवायन	४०		

भावना : ब्राह्मी स्वरस व गुलाब जल।

सेवन विधि : बडों को २ टिकीयां २ से ३ बार। बच्चोंको आधी खुराक।

पेकिंग : टिकीयां

४०, १००, ५००, १०००

शीत–पित्त एवं अन्य खून और त्वचा के रोगों मे उपयोगी।

अर्टीप्लेक्स (टिकी)

(प्रति ३२० मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग :

रक्त के शुद्धिकरण हेतु, रक्त में वातिक या कफज दोष होने पर होने वाली विकृतियों पर, फुन्सियाँ होना, दाने हो जाना, एलर्जी, शीत–पित्त।

घटक :

प्रति टिकी .—

	मि. ग्राम.		मि. ग्रा.
अगर	१०	केशर	५
उपलसरी घन	३०	काली मिर्च	५
चन्दन घन	३०	प्रवालपिष्टी	१०
गंधक	१०	साटोडी	३०
हरिद्रा घन	३०	रक्तचन्दन	३०
इन्द्रवारूणी मूल घन	३०	सोंठ घन	३०
जटामांसी घन	३०	तगर	१०
ज्येष्ठीमध	३०		

भावना :

खस, गुलाब, आंवला, गोखरु, विधारा, दूधी, शेरडी, कोकम, नींबु, व मूली।

सेवन विधि :

बडों को २।२ टिकीयाँ दिन में ३।४ बार मीठे जल से बच्चों को आधी मात्रा में।

पेकिंग :

टिकीयाँ

४०, १००, ५००, १०००

शीत एवं वर्षाऋतु में उपयोगी शर्करा रहित टॉनिक।

विगरॉल (गोली)

(प्रति १६० मि. ग्रा. की कोटेड गोली शर्करा रहित)

उपयोग :

विगोरोल अवलेह के अनुसार।

मधुमेह के रोगियों के लिये खास तैयार की हुई शर्करा रहित गोलियां।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक भस्म	२.५	मेदा	५.०
अक्कलकरा	२.५	नागकेशर	१०.०
आमलकी रसायन	३०.०	पिपली	१०.०
अष्टवर्ग घन	१४.५	प्रवाल पिष्टी	५.०
बरास कपूर	२.०	रस सिंदूर	५.०
इलायची	१०.०	रौप्य भस्म	२.५
गुडूची	५.०	शिलाजीत	५.०
जाटीपत्री	२.५	सुवर्ण भस्म	०.५
कस्तुरी	०.५	सुवर्ण बंग	५.०
केशर	१०.०	तालीस पत्र	२.५
लवंग	२.५	तमाल पत्र	५.०
महामेदा	५.०	बंग भस्म	५.०
मौक्तीक पिष्टी	२.५	वंश लोचन	१०.०

सेवन विधि :

एक से दो गोली सवेरे शाम दूध से।
बच्चों को आधी मात्रा।

पेकिंग :

गोलियां :—

४०, १००, ५००, १०००

वर्षा एवं शीतऋतु में शक्तिसंग्रह हेतु स्वादिष्ट लेह ।

विगरॉल (अवलेह)

(स्पेश्यल)

उपयोग : ठंडी की ऋतु में शक्तिसंग्रह हेतु खास उपयुक्त, शक्ति, स्फूर्ति, व चैतन्य के लिये प्रसूताओं के लिये विशेष उपयोगी, पुरानी खांसी, श्वास, थकावट, कमजोरी, बिमारी के बाद वजन बढाने के लिए ।

सावधानी : रक्तार्श, ऊर्ध्व, रक्तचाप, प्रदर, पेट की बिमारी, व खून खराबी के मरीजों को न दें ।

घटक :

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अभ्रक भस्म	०.५०	नागकेशर	१.००
आमला पल्प	१४.००	पिपली	१.५०
अकल करा	०.५०	प्रवाल पिष्टी	०.५०
आमलकी रसायन	५.००	रस सिंदुर	०.५०
अष्टवर्गा	३.७५	रौप्य भस्म	१.५०
बरास कपूर	०.२५	रौप्य वर्क	१/४ लीफ.
इलायची	०.५०	शिलाजित	१.००मी.ग्रा.
गुडुची सत्व	०.५०	सुवर्ण भस्म	०.५०
जातीपत्री	०.५०	सुवर्ण वंग	०.५०
कस्तुरी	०.५०	सुवर्ण वर्क	१/४ लीफ.
केशर	१.५०	तालीस पत्र	०.५०मी.ग्रा.
लवंग	०.५०	तमाल पत्र	१.००
महामेदा	०.५०	वंग भस्म	०.५०
मौक्तीक पिष्टी	०.५०	वंश लोचन	१.५०
मेदा	०.५०	सीरप (q. s.)	

भावना : आंवला, केशर, अम्बर, सुवर्ण पान, चांदी वर्क-मौक्तिक भस्म, अभ्रक भस्म, सुवर्ण वंग, कपूर, रस सिन्दूर, पीपल, गिलोय सत्व, नाग केशर, इलायची, लौंग, अकल करा, मेदा, महामेदा, वंशलोचन, तमाल पत्र, तालीस पत्र, शिलाजीत, प्रवाल पिष्टी ।

सेवन विधि : एक चमच सवेरे दूध से । बच्चों कों आधी खुराक ।

पेकिंग : मि. लि.
१००, २००, ४००, २०००

मचकर आना, अपचन जनित उल्टियाँ और कृमीजन्य पेटकी [illegible] उपयोगी।

वोमिटेब (टिकी)

(प्रति २५६ मि. ग्रा. की कोटेड टिकी)

उपयोग : वमन, कै होना, खास तौर से सगर्भावस्था में—पेट में कृमी होने से होनेवाली उल्टियाँ।

सावधानी : कुछ नहीं यदि प्रमाणित मात्रा में दी जाय।

घटक : प्रति टिकी :—

	मि. ग्रा.
दालचीनी	४
इलायची	८
कपूरकाचली	१३२
पीपल	१६
शकर	६४
वंशलोचन	३२

भावना : चंदनादि क्वाथ।

सेवन विधि : एक टिकी हर आधे घंटे से या चिकित्सक की आज्ञानुसार।

पैकिंग : टिकियाँ

२५, १००, ५००, १०००

छोटे बच्चों के लिये खास तौर से तैयार किया हुवा शर्बत।

वोमिटेव (शर्बत)

(नीबू के स्वादयुक्त)

उपयोग :

किसी चीजकी नफरत या गर्भवती का वमन, बेहजमी, कामला, मुसाफरी या हलचल के वजहसे बीमारी मादक पेय के इस्तिमाल से या पेट के किडे के कारण से वमन। नन्हे बच्चों के वमन या दूध मुँह से बहार निकालने पर और छातीकी जलन या अधिक लार के आने पर।

घटक :

	ग्राम.
चंदन	४
दालचीनी	८
इलायची	१३२
कपूरकाचली	१७
पीपली	६४
वंशलोचन	३२

(मीठा स्वाद)

सेवन विधि :

प्रतिदिन १ चम्मच ३ से ४ बार या ज्यादा आवश्यकतानुसार बच्चों को आधा चम्मच और छोटे नन्हे १०/१५ बूँद।

पेकिंग :

मि. लि.

५०, १००, २००, ४००

यह बढती हुई खांसी या इससे सम्बद्ध विकारों को नष्ट करती है।

व्हिपेक्स (प्रवाही)

उपयोग : जुखाम, शर्दी, खांसी गले की खराश, काली खांसी की प्रथमावस्था, श्वसन सस्थान की साधारण खराबियां, कफ को पतला करके निकालने के लिए विशेष उपयोगी।

सावधानी : सूखी खांसी में न दें।

घटक : प्रति १०० मि. लि. :—

	मि. ग्रा.		मि. ग्रा.
अदरख स्वरस	१५	लोबान पुष्प	५०
आकपुष्प सार	२.५	नवसागर	५०० मि.ग्रा.
भारंगी सार	२.५	काला नमक	५००
भोरीगणी नं. १ सार	२.५	शहद	२०
भोरीगणी नं. २ सार	२.५	सितोपलासव	१०
गाजर स्वरस	२०	शुद्ध टंकणखार	५००
ज्येष्टिमध सार	१२.५	अरडुसा सार	२.५
कु. आसव नं. ३	१०	यवक्षार	५००

सेवन विधि : तीन से चार चम्मच दिन में ३ से ४ बार उतने ही जल में। बच्चों को आधी खुराक।

पेकिंग : मि. लि.

२००, ४००

आंतों के विविध कृमी वा तत्जन्य किफायतो दर अकसीर रसायन।

कृमिनिल (सीरप)

(नारंगी सुगंधी युक्त)

उपयोग : आंतो के विविध कृमी, जैसे कि राऊंड वर्मस्, थेड वर्मस्, व्हिप वर्मस्, हुक वर्मस्, और टेप वर्मस्, आदिमे। इन कृमियोंके प्रादुरभावसे होनेवाली शिकायते जैसे कि बुखार अफारा, आकडी अरुचि, दमा, खुजली नायटे आदि दूर होती है।

घटक : प्रति ५० मि. ग्रा.

	ग्राम.		ग्राम.
अजमोद	१	कुटकी	४
ढाड़ममूल छाल	३	कुचला	२
डीके माली	३	पलास बीज	३
कडम्वा	४	पोदिना	३
काकड शिंगी	३	सागर गोटा	४
काला जिरा	४	सोनामुखी डोडा	३
कपीलो	३	उंदर कर्नी	४
करियाता	३	वावडिंग	३

सावधानी : कुछ नही।

सेवन विधि :
नन्हे : १५ से २० बूंद दिन मे तीन बार सात दिन तक
बच्चे : आधा चम्मच तीन बार या एक चम्मच दो बार दिनमें, सात दिन तक।
बड़े : एक चम्मच ३ बार या दो चम्मच दो बार दिन में सात दिन तक।

सूचना : यदि आवश्यकता हो तो एक हप्ते के बाद फिर से पूरे कोर्स को दुहरा सकते है।

जरुरी : राउंड वर्मस् या बुखार जैसी हालतमे कृमीनिल ५० मि. लि. का इस्तेमाल एक दम मं या तीन या चार सरीके भाग में आधा आधा घंट बाद सुबह दें दें। बड़ो को तीन घंटे बाद जब पेट भारी मालुम हो तब हरडे-लॅक्स की, जुलाव की टिकीयाँ दें दें।

पेकिंग : मि. लि.
५०, १००, २००, ४००

रोगानुसार औषध-सूची

रोग	औषध
प्रमेह	'ओरिक्रिन'
पाण्डु	'लिवोमिन', 'ओजस'
बालरोग	'लिविटोन', 'पेडीलेक्स', 'लिवोमिन ड्रोप्स', 'मेनोल'
मेदोवृद्धि	'कोफोल', 'फ्रुटलेक्स', 'मॅनोल'
मुखरोग	'ओवेनील', 'ओजस'
यकृत-वृद्धि	'लिवोमिन'-टिकी और ड्रोप्स
रक्तविकार	'प्युरिला', 'अर्टिप्लेक्स'
वमन	'वोमिटेब'-टिकी एवं शर्बत
वातरोग	'रिमानील', 'नेड', 'फ्रुटलेक्स'
विरेचन	'रेग्युलेक्स', 'फ्रुटलेक्स' फोर्ट
शूल	'गार्लिल'
श्वास-दमा	'स्पाइमा', 'ड्रायकोनील', 'व्हिपेक्स'
स्त्रीरोग	'फेमीप्लेक्स', 'पोझेक्स', 'ल्युनारेक्स' 'एम २ टोन', 'पोझेक्स' तेज, 'ल्युनारेक्स' 'गेलेकोल', 'कॅरीटोन', 'टिनापेन'
स्नायुविकृति	'निओ', 'पॉलरिव्हिन' 'अॅडीझुआ'
स्वप्नदोष	'नीओ'
क्षय	'सर्टीना', 'विगरोल'
मधुमेह	'जे. के. २२'
रक्तचाप	'सपेरा'

रोगानुसार औषध सूची

अग्निमांद्य - मंदाग्नि	'ओजस' प्रवाही एवं टिकियां, 'लिवोमीन' ड्राप्स, टिकीयां व शरबत
अजीर्ण–अपचन	'ओजस' एवं 'गार्लिल'
अतिसार–दस्त	'दीपन' टिकीयां व 'डायाडीन' प्रवाही
अपस्मार–मृगी	'नेड' टिकीयां व 'फ्रुटलेक्स'
अरूची	'ओजस', 'लिवोमीन' ड्राप्स व टिकीयां
अर्श - बवासीर	'अर्शोनिट', 'फ्रुटलेक्स' 'अर्शोनिट' (तेज), 'अर्शोनिट' मल्हम
अश्मरी - पथरी	'केलक्युरी'
अस्थिशोप	'मर्नोल', 'प्रवालपिष्टी'
आध्मान - अफारा	'गार्लिल'
आनाह - कब्ज	'फ्रुटलेक्स'
आमवात	'रिमानील' 'फ्रुटलेक्स'
उदररोग	'ओजस', 'गार्लिल', 'लिवोमीन' ड्राप्स व टिकीयां
उदावर्त	'गार्लिल'
उन्माद	'नेड'
कण्ठरोग	'कोकिला', 'व्हिपेक्स'
कर्णरोग	'कर्णामृत'
कमला	'लिवोमीन', 'ओजस'
कास	'व्हिपेक्स' 'ड्रायकोनील'
कृमी	'कृमीनील'
ग्रहणी - संग्रहणी	'दीपन', 'डायाडीन'
ज्वर	'क्युरील'
दंतरोग	'गमटोन'
धातुक्षीणता - निर्बलता, नपुंसकता	'पॉलरिविन', 'विगरॉल', ॲडीझुआ'
निद्रा न आना	'नेड'
नेत्ररोग	'नेत्रांजन'
प्रतिश्याय - जुकाम	'व्हिपेक्स' 'क्युरील'